RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 30 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 7 अक्टूबर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 30, 4-7 अक्टूबर 2018 तदनुसार 21 आश्विन, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हे अग्ने ! हम पर कृपालु हो

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः।
पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दहतादरातीः।।

–ऋ० ३।१८।१

शब्दार्थ–हे **अग्ने** = ज्ञानस्वरूप ! उन्नतिसाधक भगवन् ! **उपेतौ** = सामीप्य-प्राप्ति के निमित्त तू **नः** = हमारे लिए **सुमनाः** = उत्तम मनवाला, भले भाववाला, कृपालु **भव** = हो। **इव** = जैसे **सख्ये** = सखा के लिए **सखा** = सखा **साधुः** = भला होता है, **इव** = जैसे सन्तान के लिए **पितरा** = माता-पिता साधु होते हैं। **हि** = चूँकि **क्षितयः** = मनुष्य **जनानाम्** = मनुष्यों के **पुरुद्रुहः** = बहुत वैरी होते हैं, अतः ऐसे **प्रतीचीः** = उलटे मार्ग पर चलने वाले **अरातीः** = अदानियों को **प्रति+दहतात्** = प्रतिकूलता से दग्ध कर दे।

व्याख्या–हे ज्ञानदाननिपुण! अग्रगन्तः! आदर्श! ज्ञान-विज्ञान की खान! प्रकाशकों-के-प्रकाशक! परम प्रकाशमय! अज्ञानान्धकारविनाशक! दुर्गुणाघातक! सद्गुणप्रापक! ज्ञानज्योतिर्द्योतक! धर्मसुशिक्षक! अधर्मनिवारक! प्रीतिसाधक! शत्रुताविनाशक! सुधर्मसुधारक! अधर्मसुबाधक! विद्यार्कप्रकाशक! सर्वानन्दप्रद! पुरुषार्थप्रापक! अनुत्साहविदारक! उत्साहसुधारक! सज्जनसुखद प्रभो! हमारी इच्छा तेरे पास आने की है। तू **'सखा सखीनामविताः'** मित्रों का रक्षक मित्र है। सखे! जब तू हमारा सखा है, तब तेरे पास आने में हमें प्रतिबन्ध क्यों है? मित्र! स्नेहागार! चाहे हम पापी हैं, दुर्व्यसनी हैं, किन्तु हैं तो तेरे मित्र। सखे! तूने स्वयं ही कहा–**'सखा सख्युर्न प्रमिनाति संगिरम्'** [ऋ० ९।८६।१६]= मित्र मित्र की बात कभी नहीं काटता। तो हे मित्र! हम कह तो रहे हैं कि तेरे पास आना चाहते हैं, तुझे प्राप्त करना चाहते हैं। क्यों सखे! क्या अपराध? तू केवल हमारा सखा ही नहीं, वरन्–**'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे'** [ऋ० ८।९८।११] = सबको बसेरा देनेहारे! तू ही हमारा पिता है। नाना-कर्म-प्रवीण! तू हमारी माता है। हम तेरी मङ्गलकामना की कामना करते हैं।

पितः! क्या पुत्र को पिता के पास आने का अधिकार नहीं रहा? मातुश्री! तेरे स्नेह से क्या मैं वञ्चित रहूँगा, तेरी प्रेमसनी गोदी में पुनः स्थान न पा सकूँगा? माँ! माँ में तो अथाह ममता होती है। पिता तो पुत्रवत्सल होता है। पितः! अतः–**'स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये'** [१।१।९]–हे अग्ने! पिता पुत्र के लिए जैसे सुपायन=सुगम्य, सरलता से प्रापणीय होता है, वैसे ही तू हमारे लिए हो और हमें कल्याण से युक्त कर। पितः! मातः! तुमसे बढ़कर हमारा कौन हितकारी है ? भगवन्! जन-जन में वैराग्नि प्रदीप्त हो रही है। समाजशत्रु दानधर्म से विच्युत होकर संसार पर हिंसा के अङ्गार बरसा रहे हैं। उनकी इस प्रतिकूल भावना को भगवान्! भस्म कर दे। ईश्वर! कोई किसी का अमङ्गल चाहने वाला न रहे। सभी सबके हितसाधक हों। तू हमारे लिए 'सुमना' हो और हमें 'सुम्न' दे।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः।
येषामिन्द्रो युवा सखा।।

–यजु० ३३.२४

भावार्थ–जिन महानुभाव भद्र पुरुषों ने, विषय भोगों में न फँसकर, महातेजस्वी, सर्वव्यापक सूर्यवत् प्रतापी, एकरस, महाबली, सबसे बड़े परमेश्वर को, अपना मित्र बना लिया है, उन्हीं का जीवन सफल है। सांसारिक भोगों से विरक्त, परमेश्वर के ध्यान में और उसके ज्ञान में आसक्त, महापुरुषों के सत्संग से ही, मुमुक्षु पुरुषों का कल्याण हो सकता है, न कि विषय-लम्पट ईश्वर विमुखों के कुसंग से।

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम्।
सं देवो देवेन सवित्रा गत सꣳसूर्य्येण रोचते।।

–यजु० ३७.१४

भावार्थ–जो जगत्पिता परमात्मा सबका उत्पादक, पिता के तुल्य सबका और विशेषकर विद्वानों का पालक सूर्यादि प्रकाशकों का भी प्रकाशक, सर्वत्र व्यापक जगदीश्वर है, उसी पूर्ण परमात्मा की हम सब लोग, सदैव प्रेम से उपासना किया करें, जिससे हमारा सबका कल्याण हो।

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसासꣳशिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।।

–यजु० २.२४

भावार्थ–हे जगत् पिता अनेक उत्तम पदार्थों के प्रदाता परमेश्वर! अपनी अपार कृपा से, हमें वेदों के स्वाध्यायशील, शरीर की पुष्टि करने वाले अनेक खाद्य पदार्थों के स्वामी, नीरोग ऐश्वर्य शरीर वाले और कल्याणकारी शूद्र मन से युक्त बनावें। हे सकल के स्वामी इन्द्र! हम कभी दरिद्री, दीन, मलीन, पराधीन, रोगी न हों, किन्तु सुखी रहते हुए उत्तम-उत्तम पदार्थों के स्वामी हों।

संस्कारित युवा कैसे बनें ?

ले.-इन्दु पुरी

जब से लेख भेजने का आमंत्रण मिला तथा साथ ही विषयों की सूची भी प्राप्त हुई-तब से ही मस्तिष्क के किसी कोने में यह अंकित हो गया कि इस कार्य को करना है। विषयों की सूची को बार-बार पढ़ा, कुछ विषय तो वैदिक विद्वानों की योग्यता एवं स्वाध्याय के सन्दर्भ में ही हैं, पर कुछ विषय सामान्य मेरे जैसों के लिए अच्छे लगे। उनमें से भी निर्णय करने में समय लगा। क्योंकि जिस वातावरण में हम पले, बढ़े, पढ़े व जीवन व्यतीत किया, उस में हृदय के किसी कोने में आर्य समाज के प्रचार प्रसार की न्यूनताओं के प्रति गहरी टीस भी है तथा वैदिक विद्वानों का सान्निध्य पाकर अपने उत्तरदायित्व का एहसास भी है और आजकल के बदलते परिवेश में पाश्चात्य सभ्यता की आंधी के सामने अपनी विवशता भी झलकती है। सार यह है कि चिन्तन-मनन को किस तरह आचरण का जामा पहनाया जाये-यह सोच भी अन्दर ही अन्दर कचोटती है।

आज के विषाक्त वातावरण में तथाकथित चरित्रहीन धर्म गुरुओं के समाचार सुनते हैं तो मन वितृष्णा से भर जाता है। ऐसे समय में महर्षि देव दयानन्द की बहुत याद आती है-आज से सम्भवत: 150 वर्ष पूर्व महर्षि जी ने चेतावनी दी थी कि भारतवर्ष का विनाश गुरुडम व डेरों के माध्यम से ही होगा और आज हम अपनी आँखों के सामने प्रत्यक्ष देख रहे हैं। आज वही दृश्य हमें उद्विग्न कर रहा है-जिसे महर्षि ने अपनी दैवी दृष्टि से इतने वर्ष पूर्व ही देख लिया था। यदि महर्षि को और समय मिल जाता व उनके सपनों के अनुरूप वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति की दुन्दभी बजती तो सम्भवत: हमें आज इस पतित वातावरण को न झेलना पड़ता।

परन्तु कैसी भी विषम परिस्थिति हो, हमें अपने कर्तव्य कर्म को यज्ञीय भावना से करते ही रहना चाहिए। यदि चारों तरफ काली घटायें भी छाई हों तो हमें आशा का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। मुझे यह कहते हुए सन्तोष हो रहा है कि आर्य समाज यथा सम्भव इस कार्य को करने में साधना रत है।

आज विश्व में इन अपावन कार्यों को अन्जाम तक पहुंचाने के लिए अपार धन राशि तथा साधनों को परोसा जा रहा है। आर्य समाज-चाहे वह कितनी भी छोटी संस्था इन सबके मुकाबले में हो, पर सत्य की कसौटी-मानव धर्म के मापदंड़ों में सबसे समृद्ध है। इस अपवित्रता के महा समुद्र में हमारे प्रयास एक बूँद की न्याई हैं।

यह महर्षि के अनुयायियों का सर्वोपरि उत्तरदायित्व बन जाता है कि हम प्राणपण से इन शुभ कार्यों में जुट जाएँ। इसके लिए चहुँमुखी विकास की आवश्यकता है। कुछ निम्नलिखित सुझाव-आर्य समाज के कर्णधारों के विचार हेतु लिख रही हूँ।

हम केवल साप्ताहिक सत्संगों तक ही सीमित नहीं रह सकते और न ही केवल पद पाने की क्रिया में ही इतिश्री पा सकते हैं अपितु सत्संगों को रोचक बनाना, रचनात्मक गतिविधियों में युवाओं को संलिप्त करना-रविवार को समाजों में प्ले-वे बनाना, ताकि माता-पिता ध्यान से गतिविधियों में भाग ले सकें। हर्ष का विषय है कि अब कई समाजों में सत्संग के पश्चात् नाश्ते की व्यवस्था होती है, जिससे उपस्थित लोग चिन्तामुक्त भी होते हैं व आकर्षण भी होता है।

युवा वर्ग का आर्य समाजों तथा राष्ट्र में विशेष स्थान है। आज भारतवर्ष का अधिकतम महत्व इसलिए है कि युवा ही राष्ट्र की, समाज की रीढ़ की हड्डी होती है, जिस पर राष्ट्र टिका होता है। हमें गर्व है कि आज संसार भर में भारतीय युवाओं को बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। अमेरिका जैसे बड़े राष्ट्र भी भारतीय युवाओं की चिन्तन शक्ति, विद्या व योग्यता से प्रभावित हैं। सारे संसार के आई.टी. क्षेत्र में भारतीय युवाओं का बोलबाला है। यह तो बहुत प्रसन्नता का विषय है कि युवाओं ने उच्च शिक्षण संस्थाओं से विद्या प्राप्त करके लौकिक सफलता को प्राप्त कर अपना अभीष्ट सिद्ध किया। पर हमें आर्य समाजों में उन्हें उनका समाज, राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का भी उद्बोधन देना है। केवल भौतिक सुख साधन, उन्नति की अधूरी तस्वीर है। इसी सन्दर्भ में एक उदाहरण याद आया, एक बार आचार्य विनोबा जी ने अपने छात्रों को कागज के टुकड़े दिए कि इनमें संसार का मानचित्र है-टुकड़े जोड़ कर इन्हें बनाओ। छात्र लगे रहे, पर कुछ भी व्यवस्थित नहीं कर पाए। अचानक ही एक छात्र की नजर उन कागजों के उलटे पृष्ठ पर पड़ी तो कुछ मानव अंग दिखे और जब उन पन्नों को पलटा तो पूरी मानव आकृति बन गई। फिर पन्ने पलटे तो आश्चर्यचकित रह गए कि दूसरी तरफ विश्व का नक्शा था। इस उदाहरण से यह चिन्तन निकला कि यही सब समस्याओं का समाधान है। जब मानव की इकाई विशेषकर युवा पीढ़ी सुव्यवस्थित व संतुलित होती है तो सारा विश्व भी सुसंस्कृत व स्वर्गरूप हो जाता है।

आर्य समाज को गौरव है कि आर्य समाज के स्वर्णिम युग में आर्य समाज के मूर्धन्य नेता, विद्वान् एवं संन्यासी बहुत शिक्षित व प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले थे। स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व भी इन्हीं आर्य समाज के प्रतिष्ठित तथा चोटी के नेताओं ने किया। परन्तु कुछ संगठनात्मक शिथिलता तथा प्रचार प्रसार की न्यूनताओं के कारण इन परिवारों के युवा आर्य समाज से दूर हो गए। प्रचार की शैली भी खण्डनात्मक होने की वजह से प्रचार में शिथिलता आई व परिवार संगठन से टूट गए। उन परिवारों को अपने साथ पुन: जोड़ना हमारी प्राथमिकता होनी अनिवार्य है।

जरा और गहराई से देखें तो स्पष्ट होगा कि आखिर इन सब सुझावों अथवा तथ्यों की नींव क्या है? वास्तविकता का सामना करें तो नींव है परिवार। जो आजकल भौतिकवाद, अनैतिकता अथवा चरित्रहीनता की दलदल में फंसे हैं। परिवार के पुरोधा दो व्यक्ति हैं-माता तथा पिता। पिता का अधिकांश समय तो आजीविका कमाने में निकल जाता है, पर माता ही सन्तान के जीवन को संस्कारित करती है, सजाती है, संतुलित करती है, यह भी एक दुर्भाग्य रहा कि आर्य परिवारों की नारियां दूसरे मत मतान्तरों की चकाचौंध में आर्य समाज के सिद्धान्तों व मर्यादाओं को भूल गई। नारियों के दोहरे व्यक्तित्व ने सारे परिवार को असन्तुलित कर दिया व युवक व युवतियां अपने लक्ष्य से भटक गए। पाश्चात्य सभ्यता के बदलते परिवेश ने हमें विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया। आज स्थिति यह है कि परिवार के चार सदस्य भी इकटठे बैठ कर केवल मोबाइल व इंटरनेट पर व्यस्त रहते हैं। जिस संवेदनशील आयु में माता पिता को स्वयं संयमित रह कर सन्तानों के जीवन को संवारना है और साथ लेकर आर्य समाज के आयोजनों में जाना है, वही समय माता पिता का भी माल्स में, किट्टी पार्टीज में, पिक्चर हॉल्स में निकलता है। युवाओं के सामने कोई आदर्श नहीं। न तो राजनीतिक क्षेत्र में, न सामाजिक क्षेत्र में और न ही परिवारों में। युवा वर्ग नेतृत्व चाहता है-दिशा चाहता है। युवा वर्ग बिना किनारों की नदी के बहाव में बह रहा है। वह समझदार है, शिक्षित है, पर दिशाहीन है।

गृहस्थ रथ के भी 2 पहिये पति पत्नी होते हैं। गृहस्थ सब आश्रमों का सिरमौर है व सभी आश्रम इस पर आधारित हैं। इनमें मर्यादाओं का निर्वहन करना ही इसका आधार स्तम्भ है। बड़ों का सम्मान-बच्चों को संस्कारित करना, अतिथियों का मान-सम्मान तथा समाज के प्रति जागरूकता इसके आवश्यक अंग हैं। स्त्री आर्य समाजें जहाँ भी सुचारु रूप से कार्य कर रही है-बड़ी सफल हैं। पंजाब में ही स्त्री आर्य समाज जालन्धर, लुधियाना बरनाला, मोगा, बठिण्डा व विदेशों में भी पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर आर्य समाज की पताका को ऊँचा उठा रही है।

आर्य समाज का उत्तरदायित्व भी है व सुअवसर भी है कि हम इन युवाओं का सहयोग इस संगठन के लिए लें। इन्हें महत्वपूर्ण पदों पर सुशोभित करें-आर्य समाज की बागड़ोर इन्हें संभालने व यह बड़ों के मार्गदर्शन में आर्य समाज का मार्ग प्रशस्त करें व पुन: हम स्वर्ण युग में प्रवेश करें।

उजड़े हुए गुलशन को फिर संवारा सजाया जाए, तारीकियों में घिरे काफ़िले को बचाया जाए। अंधरों को कोसने से कुछ हासिल नहीं होगा, पथ जगमगा उठे, कोई तो ऐसा दीप जलाया जाए।

सम्पादकीय

मरे हुए जीव की गति क्या होती है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में अपने देश में प्रचलित मत-मतान्तरों की समीक्षा करते हुए असत्य मतों का खण्ड़न और सत्य मत का मण्ड़न किया है। आर्यावर्त में प्रचलित सभी मतों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निष्पक्ष होकर चिन्तन किया है। इसी ग्याहरवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रश्नोतर के रूप में गरूड़ पुराण तथा अन्य पोप लीलाओं का खण्ड़न किया है। मृतक जीव के नाम पर उनके परिवार को किस प्रकार लूटा जाता है इस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दृष्टान्त के माध्यम से बहुत सुन्दर प्रकाश ड़ाला है। श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि, वैतरणी नदी पार कराने के नाम पर ढ़ोगी ब्राह्मणों के द्वारा समाज में बहुत पाखण्ड़ फैलाया हुआ है। आईये महर्षि दयानन्द के शब्दों में ही इस विषय पर विचार करते हैं-

(प्रश्न) क्या गरूड़पुराण भी झूठा है?

(उत्तर) हां असत्य है।

(प्रश्न) फिर मरे हुए जीव की क्या गति होती है?

(उत्तर) जैसे उसके कर्म हैं।

(प्रश्न) जो यमराज राजा, चित्रगुप्त मन्त्री, उस के बड़े भयंकर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीरवाले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं। पाप, पुण्य के अनुसार नरक, स्वर्ग में डालते हैं। उस के लिए दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण , गोदानादि, वैतरणी नदी तरने के लिए करते हैं। ये सब बातें झूठ क्योंकर हो सकती हैं।

(उत्तर) ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं। जो अन्यत्र के जीव वहां जाते हैं उनका धर्मराज चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो वे यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिए कि वहां के न्यायाधीश उन का न्याय करें और पर्वत के समान यमगणों के शरीर हों तो दिखते क्यों नहीं? और मरने वाले जीव को लेने में छोटे द्वार में उन की एक अंगुली भी नहीं जा सकती और सड़क गली में क्यों नहीं रूक जाते। जो कहो कि वे सूक्ष्म देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वतवत् शरीर के बड़े-बड़े हाड़ पोप जी बिना अपने घर के कहां धरेंगे?

जब जंगल में आग लगती है तब एकदम पिपीलिकादि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लिए असंख्य यम के गण आवें तो वहां अन्धकार हो जाना चाहिए और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकर खा जायेंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शिखर टूट कर पृथिवी पर गिरते हैं वैसे उनके बड़े-बड़े अवयव गरूड़पुराण के बांचने, सुनने वालों के आंगन में गिर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा घर का द्वार अथवा सड़क रूक जाएगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे?

श्राद्ध, तर्पण, पिण्ड़प्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुंचता किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोप जी के घर, उदर और हाथ में पहुँचता है। जो वैतरणी के लिए गोदान लेते हैं वह तो पोप जी के घर में अथवा कसाई के घर में पहुंचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती फिर पूंछ को कैसे पकड़ेगा? यहां एक दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है कि-

एक जाट था। उस के घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। दूध उसका बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोप जी के मुख में भी पड़ता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बूढ़ा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों में दैवयोग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट ने 10 रूपया निकाल पिता के हाथ में रख कर बोला पढ़ो संकल्प। पोप जी बोला- वाह-वाह! क्या बाप बार-बार मरता है? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुड्ढी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिए।

(जाट जी) हमारे पास तो एक ही गाय है उस के बिना हमारे लड़के-बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिए उसको न दूंगा लो 20 रूपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रूपयों से दूसरी दुधारू गाय ले लेना।

(पोप जी) वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो? क्या अपने बाप को वैतरणी में डुबा कर दु:ख देना चाहते हो। तुम अच्छे सुपुत्र हुए? तब तो पोप जी की ओर सब कुटुम्बी हो गये क्योंकि उन सब को पहले ही पोप जी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उसी पोप को दिला दिया। उस समय जाट कुछ न बोल सका। उसका पिता मर गया और पोप जी बच्छा सहित गाय और दोहने की बटलोही को अपने घर में गाय बछड़े को बांध बटलोही धर पुन: जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशानभूमि में जाकर दाहकर्म कराया। वहां भी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात दशगात्र सपिण्डी आदि कराने में भी उस को मूंडा महाब्राह्मणों ने भी लूटा और भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध मांग-मूंग निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रात:काल पोप जी के घर पहुंचा। देखा तो गाय दुह, बटलोही भर, पोप जी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाट जी पहुंचे। उसको देख पोप जी बोला आईये! यजमान बैठिये!

(जाट जी) तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

(पोप जी) अच्छा दूध धर आऊं।

(जाट जी) नहीं-नहीं दूध की बटलोही इधर लाओ। पोप जी बिचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी।

(जाट जी) तुम बड़े झूठे हो।

(पोप जी) क्या झूठ किया?

(जाट जी) कहो तुमने गाय किसलिए ली थी?

(पोप जी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिए।

(जाट जी) अच्छा तो वहां वैतरणी के किनारे गाय क्यों न पहुंचाई? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?

(पोप जी) नहीं-नहीं, वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन कर उतार दिया होगा।

(जाट जी) वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर की ओर है?

(पोप जी) अनुमान से कोई तीस करोड़ कोश दूर है क्योंकि उन्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है।

(जाट जी) इतनी दूर तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो उसका उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई। अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ?

(पोप जी) हमारे पास गरूड़पुराण के लेख के बिना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।

(जाट जी) इस गरूड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

(पोप जी) जैसे सब मानते हैं।

(जाट जी) यह पुस्तक तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हारी जीविका के लिए बनाया है क्योंकि पिता को बिना अपने पुत्रों के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा और उनको पार उतार पुन: गाय को घर में ले आ दूध को मैं और मेरे लड़के पिया करेंगे। लाओ! दूध की भरी हुई बटलोही, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर की ओर चला।

(पोप जी) तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश हो जायेगा।

(जाट जी) चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन जो दूध के बिना जितना हम ने पाया है सब कसर निकाल दूंगा। तब पोप जी चुप रहे और जाट जी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस दृष्टान्त के माध्यम से यही समझाने का प्रयास किया है कि मनुष्य को अपने विवेक का प्रयोग करते हुए ऐसे पाखण्डियों से बचना चाहिए। आज भी श्राद्ध के नाम पर इसी प्रकार का पाखण्ड़ देखने को मिलता है। श्रद्धा से जीते जी जो अपने माता-पिता की सेवा करते हैं, वही उनका सच्चा श्राद्ध है। शरीर के छूट जाने पर हमारे द्वारा दी गई कोई भी वस्तु या भोग्य पदार्थ उन तक नहीं पहुंचता है। मरने के बाद प्राणी की गति उनके कर्मों के अनुसार होती है। जैसे उसके कर्म हैं, वैसी ही गति निश्चित है।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

आनन्द किन-किन परिस्थितियों में मिलता है

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दोतल्ला) कोलकत्ता-700007

मैं लेख के शीर्षक के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ उससे पहले मैं सुख और आनन्द में क्या अन्तर है। यह लिखना उचित समझता हूँ। सुख में दो अक्षर हैं। पहला ''सु'' दूसरा ''ख''। ''सु'' का तात्पर्य होता है अच्छा और ''ख'' का तात्पर्य होता है इन्द्रियाँ। सुख का तात्पर्य हुआ जो पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को अच्छा लगे वह सुख होता है और जो अच्छा न लगे वह दु:ख होता है। जैसे अच्छा दृश्य, आँखों को अच्छा लगता है, यह आँखों का सुख हुआ। अच्छा गाना या भजन, कानों को अच्छा लगता है, यह कानों का सुख हुआ। इसी प्रकार अच्छा स्वादिष्ट भोजन जिह्वा (मुख) का सुख हुआ। अच्छा स्पर्श, त्वचा (चमड़ी) का सुख हुआ और अच्छी गन्ध, नाक का सुख हुआ। जिस काम को करने से आत्मा को सुख होता है। वह आनन्द कहलाता है। जैसे आपने किसी का उपकार किया और वह प्रसन्न हो कर धन्यवाद देता। तब जो आत्मा को प्रसन्नता होती है, वह आनन्द कहलाता है। यहाँ यह बतलाना भी आवश्यक है कि पाँच ज्ञानेन्द्रियों में पाँच सुख या गुण और पाँच ही देवता होते हैं। जैसे आँखों का गुण है रूप और इसका देवता है अग्नि। जहाँ अग्नि यानि रोशनी होगी वहीं रूप दिखाई देगा। इसी प्रकार कान का गुण है शब्द और देवता है आकाश। जहाँ आकाश होगा यानि खाली जगह होगी, वहीं शब्द (आवाज) सुनाई देगा और वह कानों से सुना जायेगा। इसी प्रकार जिह्वा का गुण है। स्वाद और देवता है पानी। नाक का गुण है गन्ध (अच्छी या बुरी) और देवता है पृथ्वी। त्वचा का गुण है। स्पर्श और देवता है हवा। इस प्रकार मनुष्य के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ नाक, कान, आँख, जिह्वा और त्वचा। गुण है कान का शब्द, देवता आकाश, नाक का गुण गन्ध, देवता पृथ्वी, जिह्वा का गुण स्वाद, देवता पानी। जहाँ पानी होगा वहीं स्वाद होगा और यह जिह्वा द्वारा जाना जायेगा। त्वचा का गुण स्पर्श और देवता हवा। जहाँ हवा होगी तभी स्पर्श होगा और वह त्वचा द्वारा जाना जायेगा। इसी प्रकार आँखों का देवता अग्नि है, जहाँ अग्नि होगी वहीं रूप दिखाई देगा और वह आँखों के द्वारा देखा जायेगा। इस प्रकार हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं। आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा और पाँचों के पाँच गुण रूप, शब्द, गन्ध, स्वाद और स्पर्श है और इनके पाँच देवता अग्नि, आकाश, पृथ्वी, पानी, और हवा क्रमश: है।

अब हमारे लेख का मुख्य उद्देश्य है, आनन्द किन-किन परिस्थितियों में आता है, सो आनन्द के भी दो भाग है। पहला आनन्द दूसरा परम आनन्द। इनकी दो-दो स्थितियां हैं। आनन्द की स्थिति परोपकारी कार्यों में और गहन निद्रा यानि सुषुप्ति अवस्था में। जब हम किसी दूसरे की भलाई का कार्य करते हैं, तो उस कार्य में हमें जो सुख मिलता है वह आनन्द कहलाता है कारण वह सुख किसी ज्ञानेन्द्रिय से नहीं ज्ञात होता बल्कि आत्मा को प्रतीत होता है, इसलिए वह आनन्द कहलाता है। इसी प्रकार गहरी निद्रा में हमें जो सुख प्राप्त होता है वह भी किसी ज्ञान इन्द्रिय को नहीं होता बल्कि आत्मा को होता है इसलिए यह भी आनन्द कहलाता है।

इसी प्रकार परम् आनन्द भी दो अवस्था में आता है। पहली समाधि की स्थिति में और दूसरी मोक्ष की स्थिति में। जब मनुष्य अष्टांग योग करता है तब वह यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा की स्थिति से गुजर कर समाधि अवस्था में पहुँचता है तब जीवात्मा को अति सुख मिलता है, उसी को परम् आनन्द कहते हैं। वह समाधि की अवस्था में ही मिलता है। दूसरा परम् आनन्द मोक्ष की स्थिति में मिलता है। जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तब जीवात्मा या तो दूसरी योनि, यानि दूसरे शरीर में चला जाता है। तब वह जीवात्मा परम् आनन्द से वंचित रहती है। परन्तु यदि उस जीवात्मा को मोक्ष मिल जाता है, तब वह जीवात्मा एक लम्बे समय तक यानि 31 मील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम् आनन्द की स्थिति में रहता है। अब प्रश्न उठता है कि मोक्ष तो मृत्यु के बाद मिलता है तो इसको शरीर से क्यों जोड़ा जाता है। इसका उत्तर यही है कि जीवात्मा तो अमर है, मरता तो शरीर है। चूँकि मोक्ष में जीवात्मा तो रहती ही है, परम् आनन्द तो जीवात्मा का विषय है, इसलिए हम मोक्ष की स्थिति को भी मानते हैं, जो जीवात्मा को शरीर छोड़ने के बाद मिलता है। इस प्रकार लेख के शीर्षक के अनुसार आनन्द और परम् आनन्द की स्थितियों का वर्णन कर दिया। अब लेखनी को विराम देते हैं।

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर बरनाला में धार्मिक आयोजन

आर्य समाज बरनाला के निर्देशानुसार दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर बरनाला में धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के उच्चकोटि के विद्वान श्री हरीश चन्द्र आर्य विशेष रूप से पधारे। संस्था की निर्देशक अनीता मित्तल ने आए हुए विद्वानों तथा आर्य समाज के सदस्यों का स्वागत किया। प्रोग्राम को सम्बोधित करते हुए पण्डित हरीश चन्द्र जी ने विद्यार्थियों को वेद और उनकी शिक्षाओं पर चलने, श्रद्धा, संयम तथा श्रम द्वारा जीवन में सफलता प्राप्त करने, स्वामी दयानन्द जी के कार्यो तथा समाज में फैली बुराइयों को समाप्त करने हेतु विचार प्रस्तुत किए। राम कुमार सोबती द्वारा आए हुए सभी विद्वानों व सदस्यों का धन्यवाद किया गया। प्रोग्राम में तिलक राम मन्त्री, प्रिंसीपल वन्दना गोयल, कृष्ण कुमार पुरोहित आर्य समाज के सदस्यों, मैडम अन्जू बाला, नीना रानी, चारू कपिल और समूह स्टाफ तथा विद्यार्थियों ने भाग लिया शांति पाठ उपरान्त प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज धारीवाल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज धारीवाल का वार्षिक उत्सव महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज जी के जयघोषों से बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर के महोपदेशक आचार्य नारायण सिंह जी के प्रभावशाली प्रवचन तथा भजनोपदेशक पं० सतीश सुमन एवं सुभाष राही जी के ईश्वरीय भजन, श्रोताओं को सुनने को मिले और बहुत सराहा गया।

23-9-2018 रविवार को विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विश्व शान्ति, सदभावना के लिये रखे गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति में बहुत अधिक वर्षा होने के बावजूद भी सैकड़ों नर-नारियों ने आहुति डाल कर अपने-आप को सौभाग्यशाली समझा। उसके पश्चात् देश भक्ति तथा ईश्वरीय भजन, प्रभावशाली व शिक्षा प्रद प्रवचन हुये। अन्त में स्वामी सदानन्द सरस्वती जी महाराज का आशीर्वाद रूपी प्रवचन हुआ। शान्ति पाठ के साथ आर्य समाज अमर रहे। महर्षि दयानन्द जी के जयघोषों से आर्य समाज का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

-जोगिन्द्र पाल शास्त्री मन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

यजुर्वेद में पुरूष सूक्त

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

यत्पुरूषं व्यदद्यु: कविधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादाऽउच्येते।।10।।

पदार्थ-विद्वान लोग परमात्मा के स्वरूप को विविध प्रकार से वर्णन करते हैं। एक जिज्ञासु उनसे प्रश्न करता है कि आप (यत्) जिस (पुरूषम्) पूर्ण परमेश्वर को (वि अदधु:) विविध प्रकार से धारण करते हो उसको (कविधा) कितने प्रकार से (विअकल्पयन्) विशेष कर बताते हो और (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (मुखम्) मुख के समान श्रेष्ठ (किम्) कौन (आसीत) है। (बाहू) भुजबल का धारक (किम्) कौन (ऊरू) जांघों के समान कार्य करने वाला और (पादौ) पांव के समान (किम्) कौन (उच्येते) कहे जाते है।

पाठक इस मन्त्र पर ध्यान दें यहां यह प्रश्न किया गया है कि सम्पूर्ण सृष्टि को एक मनुष्याकार मान लें तो उसका मुख, बाहू, ऊरू और पांवों का निर्माण किसके द्वारा होगा। मन्त्र में यह नहीं पूछ गया कि ईश्वर के किस अङ्ग से कौन उत्पन्न हुआ। यह प्रश्न इस प्रकार पूछा भी नहीं जा सकता था क्योंकि ईश्वर तो निराकार है। अगले मन्त्र में इन प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया गया है।

ब्राह्मणोऽअस्य मुखमा सीद्बाहू राजन्य: कृत:।

ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पदभ्या ँशूद्रो-ऽअजायत्।।11।।

पदार्थ-पद का अर्थ करते समय ऊपर किये गये प्रश्नों का ध्यान रखें। (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (ब्राह्मण:) ब्राह्मण मुख के समान (आसीत्) है। (बाहू:) भुजाएँ (राजन्य:) क्षत्रिय (कृत:) द्वारा बनती है अर्थात् क्षत्रिय सृष्टि में बाहू के समान है। (यत्) जो (ऊरू) जाघों के समान (तत्) वह (अस्य) इसका (वैश्य:) वैश्य है। (पदभ्याम्) पैरों के समान (शूद्र) शूद्र (अजायत) होता है। यहां उत्तर प्रश्न के अनुरूप ही दिया गया है। इस तरह यह धारणा कि ब्रह्मण्ड, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रमश: ब्रह्म के मुख, बाहू, जांघ अथवा पैर से उत्पन्न हुए है मिथ्या है।

अगले मन्त्र में फिर सृष्टि उत्पत्ति के क्रम का वर्णन प्रारम्भ हो गया है।

चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षो: सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुष्च प्राणश्च मुखादग्नि जायत।।12।।

पदार्थ-इस पूर्ण ब्रह्म के (मनस:) ज्ञान स्वरूप सामर्थ्य से (चन्द्रमा) चन्द्रलोक (जात:) उत्पन्न हुआ (चक्षो:) ज्योति स्वरूप सामर्थ्य से (सूर्य्य:) सूर्य मण्डल (अजायत) उत्पन्न हुआ (श्रोत्रान्) श्रोत नाम अवकाश रूप सामर्थ्य से (वायु:) वायु (च) तथा आकाश प्रदेश (च) और (प्राण:) जीवन के निमित्त दस प्राण और (मुखात्) मुख्य ज्योतिर्मय भक्षणरूप सामर्थ्य से (अग्नि:) अग्नि (अजायत:) उत्पन्न हुआ।

इसी प्रकार अगले मन्त्र में अन्तरिक्ष, द्यौ, भूमि आदि के उत्पन्न होने का वर्णन है।

सृष्टि उत्पत्ति के विषय को इसी स्थल पर विराम देकर अगले तीन मन्त्रों में यज्ञ के विषय में सामान्य वर्णन है। हम यहां केवल दो मन्त्र दे रहे हैं।

यत् पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत:।

बसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ-इध्म:शरद्धवि:।।14।।

पदार्थ-(यत्) जब (हविषा) ग्रहण करने योग्य (पुरूषेण) पूर्ण परमात्मा के साथ (देवा:) विद्वान लोग (यज्ञम्) मानस ज्ञान यज्ञ को (अतन्वत) विस्तृत करते हैं। (अस्य) इस यज्ञ के (वसन्त:) वसन्त पूर्वाहण काल ही (आज्यम्) घी (ग्रीष्म:) ग्रीष्म मध्यान काल (इध्म:) इन्धन और (शरत) शरद रात्रि काल (हवि:) होमने योग्य पदार्थ (आसीत्) है।

यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।।16।।

पदार्थ-जो (देवा:) विद्वान् लोग (यज्ञेन) ज्ञान यज्ञ से (यज्ञम्) अग्निवत् तेजस्वी ईश्वर की (अयजन्त तानि) पूजा करते हैं। (तानि) वे ईश्वर की पूजा आदि (धर्माणि) धारणा रूप धर्म (प्रथमानि) अनादि रूप से मुख्य (आसन्) हैं। (ते) वे विद्वान् (महिमान:) महत्व से युक्त हुए (यत्र) जिस सुख में (पूर्वे) इस समय से पूर्व हुए (साध्या:) साधनों को किये हुए (देव:) विद्वान (सन्ति) है उस (नाकम्) दुख रहित मुक्ति को (ह) ही (सचन्त) प्राप्त होते हैं। अगले मन्त्र में बतलाया गया है कि कारण को कार्य में परिवर्तित कर परमात्मा सृष्टि को उत्पन्न करता है।

फिर अगला मन्त्र बड़ा महत्वपूर्ण है उसमें मुक्ति का मार्ग बतलाया गया है।

वेदाहमेतं पुरूषम् महान्तमादि-त्यवर्णं तमस: परस्तात।

तमेव निवदित्वाति मृत्युमे-तिनान्य: पन्थाविद्यते अय-नाय।।18।।

पदार्थ-(अहम्) मैं (एतम्) जिस पूर्वोत्त्क (महान्तम्) बड़े बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्ण) सूर्य के समान प्रकाशमान (तमस:) अज्ञान और अन्धकार से (परस्तात्) पृथक् वर्तमान (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूँ। (तम्, एव) उसी को (विदित्वा) जान कर हम (मृत्युम्) मृत्यु को (अति एति) उल्लंघन कर जाते है किन्तु (अन्य:) इससे भिन्न (पन्था:) मार्ग (अयनाय) मोक्ष के लिए (न विद्यते) नहीं विद्यमान है।

भावार्थ-परब्रह्म परमात्मा के स्वरूप को जान कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

फिर वह ब्रह्म कैसा है इस विषय का वर्णन अगला मन्त्र करता है।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तर-जायमानो बहुधा वि जायते।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्युर्भुवनानि विश्वा।।19।।

पदार्थ-जो यह सर्वरक्षक आप उत्पन्न न होता हुआ अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न कर और उसमें प्रविष्ट होकर सर्वत्र विचरता है जिसे अनेक प्रकार से प्रसिद्ध ईश्वर को विद्वान लोग ही जानते हैं उस जगत् के आधार रूप सर्वव्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्यों को आनन्द भोगना चाहिए।

अगले मन्त्र में संसार के रचयिता परमात्मा की उपासना करने को कहा गया है। उसी ने हमें जीवित रहने के सभी साधन उपलब्ध किये हैं। अब विद्वानों को ब्रह्म को जानकर क्या करना चाहिए। इसका वर्णन इस मन्त्र में हैं।

रूचं ब्रह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्दशे।।21।।

पदार्थ-हे ब्रह्म निष्ठ पुरूष। (जो (रूचम्) रूचिकारक (ब्राह्म) ब्रह्म के उपासक (त्वा) आपको (जनयन्त:) सम्पन्न करते हुए (देव:) विद्वान् लोग (अग्रे) पहले (तत्) ब्रह्म, जीव और प्रकृति के स्वरूप को (अब्रुवन) कहें (य:) जो (ब्राह्मण:) ब्राह्मण (एवम्) ऐसे (विद्यात्) जाने (तस्य) उसके वे (देवा:) विद्वान् (वशे) वंश में (असन्) हों।

भावार्थ-विद्वानों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे समाज की रूचि वेद, ईश्वर और सदाचार की तरफ मोड़ें। अब अन्त में एक बार फिर ईश्वर के स्वरूप को अगले अन्तिम मन्त्र में बतलाया गया है।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णान्निषाणामुं मऽइषाण सर्व लोकंऽइषाण।।22।।

पदार्थ-हे जगदीश्वर। जिस (ते) आपकी (श्री:) समग्र शोभा (च) और (लक्ष्मी:) सर्व ऐश्वर्य (च) भी (पत्न्यौ) दो स्त्रियों के समान (अहो रात्रे) दिन रात (पार्श्वे) आगे पीछे आपकी सृष्टि में (अश्विनौ) सूर्य, चन्द्रमा (व्यात्तम्) फैले मुख के समान (नक्षात्राणि) नक्षत्र (रूपम्) रूप वाले हैं सो आप (मे) मेरे लिए (अमुम्) परोक्ष सुख को (इष्णन्) चाहते हुए (इषाणा) चाहना कीजिए। (मे) मेरे लिए (सर्वलोकम्) सब के दर्शन को (इषाण) प्राप्त कीजिऐ। (मे) मेरे लिए सब सुखो को (इषाण) पहुँचाइये।

इस प्रकार पुरूष सूक्त में परमात्मा के स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति और मोक्ष प्राप्ति के साधन को बता दिया गया है।

चमत्कारों का पोलखाता

ले.-इन्द्रजित देव यमुनानगर

विज्ञान का एक सर्वमान्य नियम है-बिना किसी कारण कार्य नहीं होता। लोहे बिना रेल का पहिया अथवा पटरी बन नहीं सकती। लोहा रेल का कारण तथा रेल का पहिया अथवा पटरी कार्य हैं। इसी प्रकार रोटी कार्य है तो आटा कारण है। आटे को कार्य भी माना जा सकता है। तब इस कार्य का कारण गेहूँ माना जाएगा। इसी व्यवस्था को वैशेषिक दर्शन (४/३) में कहा है-कारण भावत् कार्य भाव:। इसी प्रकार इस सृष्टि का भी कोई-न-कोई कारण तो होगा ही। यह वैदिक सिद्धान्त आज का विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है-Matter cannot created not it can be destroyed विज्ञानवेत्ताओं ने स्पष्ट घोषणा की है कि जहाँ Material cause (उपादान कारण) नहीं होगा, वहाँ वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने क्रान्तिकारी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' के अष्टम् समुल्लास में लिखा है-''साकार वस्तु से ही साकार वस्तु बनती है।'' साँख्यदर्शन १/४३ में भी लिखा है-नावस्तु वस्तुसिद्धि: न अर्थात् जो वस्तु कारण में नहीं है, वह कार्य में भी नहीं आ सकती। सांख्य दर्शन १/८३ में भी लिखा है-'कारण-भावच्य' अर्थात् कार्य का अस्तित्व कारण को छोड़कर पृथक् नहीं होता।

इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन गीता के १२/१३ वें श्लोक में भी किया है

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत:।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वन-योस्तदर्शिभि:।।

अर्थात् यदि कोई वस्तु वर्तमान नहीं है तो उसका वर्तमान (उपस्थित) नहीं हो सकता तथा यदि उपस्थित है तो वह अनुपस्थित हो जाए, ऐसा नहीं हो सकता। इन दोनों तथ्यों का निर्णय तत्वदर्शियों अर्थात् प्रकृति तथा परमाणुओं का साक्षात्कार करने वाले विद्वानों ने किया है।

जगत् तथा वस्तु के कारण व कार्य को यदि हम सच्चाई व गहराई से जान लें तो संसार में प्रचलित अन्धविश्वासों व कथित-चमत्कारों की पोलपट्टी खुल सकती है। पहले हम जगत के ३ कारणों को समझ लेते हैं, फिर चमत्कारों की पोलपट्टी खुलेगी-पहला कारण है उपादान। उपादान का अर्थ है-जिसके बिना कुछ न बने। हमें अंग्रेज़ी में Material Cause वैज्ञानिकों ने स्वीकारा है। स्वर्ण से आभूषण बनते हैं। घड़ा मिट्टी से बनता है। रोटी आटे बिना नहीं बनती। वस्त्र रूई से बनता है। ये सब उपादान कारण अर्थात् पदार्थ हैं परन्तु यह भी सत्य है कि इनमें से कोई एक भी वस्तु अपने-आप नहीं बनती। लाखों वर्षों तक लोहा पड़ा रहे तो रेल का पहिया या दरवाज़ा अथवा बाल्टी नहीं बन सकता। स्वर्ण से आभूषण, मिट्टी से घड़ा, रूई से वस्त्र, आटे से रोटी तथा लोहे से रेल का पहिया, दरवाज़ा या बाल्टी अपने-आप नहीं बनती। इन्हें बनाने वाला कोई-न-कोई व्यक्ति अवश्य होना चाहिए। जिसके बनाने से बने, वह दूसरा कारण है-निमित्त। इसे अंग्रेज़ी में आधुनिक वैज्ञानिकों ने Efficient Cause कहा है। स्वर्ण से आभूषण बनाने वाला स्वर्णकार निमित्त कारण है। मिट्टी से घड़ा बनाने वाला कुम्हार निमित्त कारण। आटे से रोटी बनाने वाली हमारी माँ निमित्त कारण है। लोहे से बालटी या दरवाज़ा बनाने वाले को लोहार कहना होगा। तीसरा कारण साधारण कारण माना जाता है जिसे अंग्रेज़ी में आधुनिक वैज्ञानिकों ने Formal Cause नाम से अभिहित किया है। दुकान में स्वर्ण पड़ा हो, स्वर्णकार भी वहाँ उपस्थित हो तो क्या आभूषण बन जाएगा ? हाथ, आंख, प्रकाश, काल व अग्नि आदि स्वर्णकार को अपेक्षित है। इनके बिना वह आभूषण नहीं बना सकता। घड़ा, बालटी, वस्त्र व रोटी आदि बनाने के लिए भी यही नियम लागू होता है। उपकरणों व प्रयोजनों का होना भी अनिवार्य है। आभूषण, रोटी, घड़ा व दरवाज़ा आदि किस काम आएंगे? किसके काम आएंगे, इनके प्रयोजन क्या हैं ?

इस आधार पर यह संसार, यह सृष्टि या जगत् भी बिना कारण नहीं बन सकता था, न ही बिना कारण बना है। यह बनाया गया है, इसका सृजन किया गया है। इसीलिए इसे सृष्टि भी कहते है। यह अनित्य है। यह बनाई गई है। बनाने से पूर्व यह न थी। यह नित्य वस्तु प्रकृति से बनाई गई है। इसे अंग्रेजी में आधुनिक वैज्ञानिकों ने Matter कहा है वह स्वीकार किया है।

सृष्टि साकार है तो प्रकृति भी साकार है क्यों कि साकार वस्तु से ही साकार वस्तु उत्पन्न होगी। परमेश्वर क्योंकि निराकार है। अत: उससे सृष्टि या जगत् उत्पन्न हुआ, यह मानना सर्वथा असत्य है। सृष्टि प्रकृति से सृजित की गई। उसके बिना सृष्टि बन नहीं सकती। अत: प्रकृति उपादान कारण (Material Cause) है। वह जड़ पदार्थ है। अपने आप कुछ नहीं कर सकती। परमेश्वर सृष्टि का निमित्त कारण (Efficient Cause) है अर्थात् ईश्वर ने प्रकृति से सृष्टि या कहिए जगत् बनाया परन्तु किस प्रयोजन तथा किन उपकरणों से सृष्टि या जगत् को बनाया ? यह भी विचारणीय है। मिट्टी के अतिरिक्त चोक आदि सहायक कारण तथा घड़ा किस काम आएगा, किसके काम आएगा, इसका प्रयोजन क्या होगा-यह सब जानना भी आवश्यक है। स्पष्ट उत्तर यह है कि जो सृष्टि का भोग करता है अर्थात् जीव। यह सृष्टि उसी के लिए बनाई गई है। उसे Formal Cause अर्थात् साधारण कारण कहा जाता है। ईश्वर का ज्ञान, ईश्वर की शक्तियां आदि उपकरण भी साधारण कारण ही है।

इस विश्लेषण के विपरीत कुरान (मं. १/सि.१) स्. 2 आ. ११८) के अनुसार खुदा ही आरम्भ में था। शेष कुछ भी न था। वह भूमि और आस-मान को उत्पन्न करने वाला है तथा उसे कुछ करना नहीं पड़ता। वह जो कुछ करना चाहता है, वही कहता है-हो जा (कुन) तो वह हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऐसा मानने वालों से पूछा है कि 'हो जा' वाला आदेश किसको दिया गया? किसने सुना ? कौन-क्या बना ? किस पदार्थ से बना ? किसके लिए बना ? जब यह मानते हो, कहते हो कि खुदा के सिवाय कोई वस्तु न थी तो यह विशाल-विस्तृत ब्रह्माण्ड बिना Material Cause अर्थात् उपादान कारण के कैसे बन गया ? तुम एक मक्खी की एक टांग ही बनाकर दिखाओ। ईसाई भी बाईबल के अनुसार ऐसा ही मानते हैं तथा उनसे भी यही हमारे प्रश्न हैं। पौराणिकों का विचार यह है कि जैसे मकड़ी बाहर से कोई पदार्थ नहीं लेती, अपने शरीर में से ही तन्तु निकालकर जाला बना लेती है, ऐसे ही परमेश्वर अपने में से ही सृष्टि को बना लेता है। पौराणिकों हिन्दुओं से हमारा निवेदन है कि मकड़ी अपने शरीर में उपस्थित जड़ प्रकृति से बने जड़ पदार्थों से जाला बनाती है। अपनी आत्मा से वह कुछ पदार्थ निकालकर कुछ नहीं बना सकती। साकार वस्तु साकार वस्तु से ही बनती है, यह बात पहले भी लिखी गई है। मकड़ी का आत्मा निराकार है तथा निराकार से साकार वस्तु बन ही नहीं सकती। मकड़ी की आत्मा निमित्त कारण है। उसका जड़रूप शरीर तन्तु का उपादान कारण है।

इस सम्बन्ध में महर्षि कापिल का यह सूत्र विचारणीय है-नावस्तुनो वस्तुसिद्धि:। सांख्यदर्शनम् १/४३

अर्थात् अवस्तु से वस्तु की सिद्धि नहीं होती। कार्यमात्र का उपादान वस्तुभूत होना चाहिए।

पूर्वोक्त तीनों कारणों को समझ लें तो बहुत-से अन्ध विश्वास, पाखण्ड व कथित-चमत्कार समाप्त हो सकते हैं। मुझे स्मरण है कि सन् १९७२ में साईं बाबा अपना एक 'चमत्कारपूर्ण' प्रदर्शन करके घड़ियाँ, भस्म व अंगूठियां निकालकर बाँट देता था। दर्शक यही मानते थे कि यह बाबा अपनी अलौकिक सिद्धियों से ऐसा चमत्कार करता है। तभी कर्नाटक के एक विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने उसे चुनौती पूर्ण पत्र लिखा था-''आप मेरे यहाँ आकर रात्रि विश्राम करें। अगली प्रात: मेरे सामने स्नान करें तथा वस्तु पहनें। तत्पश्चात् मैं आपको विश्व विद्यालय में ले चलूँगा। वहाँ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं अधिकारियों के समक्ष अपना चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन करके दिखाएंगे तो मैं भी आपका श्रद्धालु बन जाऊँगा। इसका कोई उत्तर बाबा ने नहीं दिया था तथा न ही फिर कोई कथित चमत्कार ही दिखाया। यदि वह उपकुलपति की इच्छानुसार प्रदर्शन करना मान जाता तो स्वत: सिद्ध हो जाना था कि वह अपने वस्त्रों के भीतर दाएँ-बाएँ कुछ घड़ियाँ, अँगूठियाँ व भस्म की प्रड़ियाँ छिपा कर लाता था तथा वस्त्र को दबाने से घड़ियाँ आदि बाहर आ जाती थीं। **(क्रमश)**

आर्य समाज नवांकोट में जन्माष्टमी मनाई

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में जन्माष्टमी का पवित्र त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता डा० प्रकाश चन्द, प्रधान आर्य समाज ने की। सर्वप्रथम सभी भाई बहनों ने मिल कर संध्या हवन यज्ञ सम्पन्न किया। कुमारी शिवानी, आर्य और लक्षमण तिवारी जी ने भजनों द्वारा श्री कृष्ण को स्मरण किया। आर्य समाज माडल टाऊन के प्रधान श्री हीरा लाल ने अपने भाषण में श्री कृष्ण जी के गुणों का वर्णन किया। श्री देशबन्धु जी ने कहा कि श्री कृष्ण परमयोगी थे। प्रति दिन सन्ध्या हवन यज्ञ करते थे। माता जगदीश रानी प्रधाना आर्य महिला सभा ने कहा कि श्री कृष्ण को माखन चोर कह कर बदनाम किया जाता है। उनकी अपनी हजारों गाये थी। श्री इन्द्रपाल प्रधान आर्य समाज लक्षमण सर ने कहा कि श्री कृष्ण परम दयालु, व सब के प्रति मित्र भाव रखते थे। राजनीति के महापंडित थे। श्री बनारसी दास आर्य ने अपने प्रवचन में कहा कि श्री कृष्ण भारत भूमि को एक शक्तिशाली सुदृढ़, आर्यवर्त देश बनाना चाहते थे। इस सपने को पूरा करने के लिये उन्हें कंस, जरासंध, शिशुपाल, दुर्योधन जैसे अत्याचारियों को रास्ते से हटाना पड़ा। श्री बाल किशन ने बड़ी अच्छी तरह से मंच संचालन किया। श्री विजय आनन्द, कीमती लाल, विनोद मदान, राज कुमार योगाचार्य, हरविन्द्र कुमार, निर्मल आर्य, सुदेश आर्य, शकुन्तला आर्य, दयानन्द आर्य स्कूल के बच्चों व अध्यापक तथा सभी आर्य समाजों, योग सामितियों का विशेष योगदान रहा।

शान्ति पाठ के साथ, प्रसाद वितरण करके कार्यक्रम की पूर्णाहुति हो गई। प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद किया।

-बाल किशन, मन्त्री आर्य समाज नवांकोट, अमृतसर

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप का चुनाव सम्पन्न

आपको सूचित किया जाता है कि आर्य समाज नंगल का वर्ष (2018-19) का नया चुनाव समाज के व्योवृद्ध सभासद श्री आसकरन दास सरदाना जी की देखरेख में हुआ, जिसमें श्री सतीश अरोड़ा जी (पूर्व मंत्री) को सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए चुना गया और उनको सदस्यों की सहमति से कार्यकारिणी गठित करने के अधिकार दिए गए।

निम्नलिखित अधिकारी एवं सदस्य बनाए गए।

संरक्षक : सर्वश्री आसकरन दास सरदाना, ओ. पी. खन्ना, सुरेन्द्र रावल, जी. सी तलुजा, श्रीमति कान्ता भारद्वाज।

सलाहकार : श्री सुरेन्द्र मदान (पूर्व अध्यक्ष)

अध्यक्ष : सतीश अरोड़ा, उपाध्यक्ष-प्रेम सागर, राजी खन्ना, राजीव खन्ना। महामन्त्री-श्री हरेन्द्र भारद्वाज, उपमन्त्री-पंकज खन्ना, श्रीमति नरेश सहगल, आशा अरोड़ा। प्रचार मन्त्री : श्री मन्जुल शर्मा, करन खन्ना, कोषाध्यक्ष-श्री सतपाल जौली, ऑडीटर-श्री प्रेम सागर, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्रीमति आंचल शर्मा।

सदस्य : सर्वश्री डा. ईश्वर चन्द्र सरदाना, विनय रावल, अशोक भाटिया, अभिषेक खन्ना, नितिन खन्ना, सक्ता सिंह, डा. बनारसी दास, प्रेम प्रकाश शर्मा। (योगाचार्य) अशोक बाली, महीप जौली, रमन तलुजा।

स्त्री आर्य समाज-संरक्षक-श्रीमति जनक रावल, अध्यक्षा: श्रीमति नरेश सहगल, उपाध्यक्षा-श्रीमति वीना प्रेम सागर, महामन्त्री-श्रीमति मीनाक्षी खन्ना, उपमन्त्री-श्रीमति पूनम खन्ना, हनी सेठ, दीप्ती खन्ना।

सदस्य-श्रीमति आरती खन्ना, वन्दना तलुजा, ऊषा ठाकुर, मीना शर्मा, विमला भाटिया, विन्नी रावल, रेनु भारद्वाज, स्नेह लता पाठक।

प्रधान, आर्य समाज नंगल

गुरुकुल हरिपुर में नव चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

ईश्वर की दिव्य वाणी वेद और यज्ञ की महत्ता को स्थानीय लोग जानें, समझें, वेदों की सुरक्षा हो एवं गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों का वेदपाठ अभ्यास हो तथा पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में अल्प मात्रा में हमारा योगदान रहे, इन्हीं पवित्र भावनाओं से गुरुकुल, हरिपुर, जुनानी, जि. नुआपड़ा विगत २०१० से प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन करते आ रहा है।

इस वर्ष भी 26.08.2018 को श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) के अवसर पर गुरुकुल के संचालक पूज्य डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में तथा श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में नवम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ तथा गुरुकुल में अध्ययनरत २७ ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ (विद्यारम्भ) संस्कार, गुरूकुलीय ब्रह्मचारियों के द्वारा ''ईश्वर एक नाम अनेक'', ''चोटी यज्ञोपवीत की महत्ता'' से सम्बन्धित नाटिका तथा ''राजा भोज के साथ जुलाहा एवं लकड़हारा'' के संवाद का संस्कृत नाटिका प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य जी ने संस्कारों की महत्ता बताते हुए जीवन में यज्ञोपवीत की क्या उपयोगिता है, इस विषय में अनेक उदाहरण देकर समझाये फलत: ओड़िशा तथा छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से पधारे अनेक सज्जन प्रभावित होकर जीवन में मांस मदिरा मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करने का व्रत लेकर तीन ऋण से मुक्त कराने वाला यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण किये।

ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान करने पूज्य स्वामी विशुद्धानन्द जी, पूज्य स्वामी सोमवेश जी, श्री धनुर्धर महापात्र श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी एवं ओड़िशा प्रदेश के भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर, अनुगुल, रायगड़ा, पाटनागढ़, भंजनगर आदि आर्य समाज से एवं पश्चिम ओड़िशा के विभिन्न आर्य समाजों से शताधिक साधु-सन्त एवं आर्य सज्जन तथा नुआपड़ा एवं खरियार रोड़ से अनेक बुद्धिजीवी एवं व्यवसायीगण तथा ब्रह्मचारियों के माता-पिता पधारे थे।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से, गुरुकुल के सहयोगियों के सर्वविध सहयोग व आशीर्वाद से 26 अगस्त से प्रारम्भ हुआ नवम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 09.09.2018 को हुई। पन्द्रह दिवसीय पांच से छ: घण्टा चलने वाला महायज्ञ में प्रतिदिन नये-नये यजमान दम्पती उपस्थित होकर लगभग 1500 मन्त्रों से आहुति प्रदान करते थे।

कार्यक्रम को व्यवस्थित सम्पन्न कराने में श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, श्री ताराकन्त जी, श्री संजीव कुमार साहु एवं गुरुकुल के सम्माननीय पदाधिकारियों व हितैषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम गढ़ी आश्रम उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायति जी के सान्निध्य में दिनांक 16 से 23 सितम्बर-2018 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए गए तथा योगदर्शन का पठन पाठन भी कराया गया। शिविर में रोजड़ के आचार्य आत्मन जी विशेष रूप से पधारे हुए थे। आचार्य जी ने शिवरार्थियों की शंकाओं का समाधान भी कुशलतापूर्वक किया। इस बार के शिविर में हरिद्वार से स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधारे हुए थे। मां सत्यप्रियायति तथा अन्य शिविरार्थियों के भजन होते रहे तथा पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी के आध्यात्मिक प्रवचनों का शिवरार्थियों पर विशेष प्रभाव रहा। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में हिमाचल प्रदेश, जन्मू कश्मीर, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड आदि स्थानों से आए हुए लगभग 130 शिवरार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सितम्बर 21 को श्रीराजपाल सिंह आर्य (सहारनपुर के पास के) जी ने पूज्य महात्मा जी से संन्यास की दीक्षा ली तथा उनका नाम स्वामी अभयानन्द जी रखा गया। शिविर में इस बार महात्मा जी के प्रवचनों का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि बहुत से व्यक्ति तथा दम्पत्ति वानप्रस्थ में दीक्षित होने के लिए तैयार हो गए... आगामी शिविरों में वे दीक्षा लेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करके गए... अगला शिविर 15 से 21 अप्रैल 2019 तक आयोजित किया जाएगा।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

हे राम...

ले.-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

दूरदर्शन पर सर्वोच्च न्यायालय के उस निर्णय, जिसमें विवाहेत्तर सम्बन्ध (व्याभिचार) को अपराध मुक्त घोषित किया है, का हृदय विदारक समाचार सुनकर दंग रह गया। तभी से बेचैनी रही कि कहीं इस देश को नष्ट करने के पीछे कोई घातक षड्यन्त्र तो नहीं चल रहा है, जिसने न्यायालय, संसद, मीडिया सभी को अपने जाल में फंसा रखा है। कभी 'लिव इन रिलेशन', कभी 'समलैंगिकता', तो अब यह धूर्ततापूर्ण निर्णय। उधर संसद द्वारा कभी शाहबानो तो कभी SC/ST Act पर किए गये फैसले, कहीं गो आदि पशुओं की निर्मम हत्या, तो कहीं भारतीय इतिहास व वेदादि शास्त्रों की अपनों ही द्वारा भर्त्सना।

अहो! यह कैसी स्वतन्त्रता है, जहाँ प्रत्येक आदर्श का दम घोंटा जा रहा है, हर न्यायसंगत बात को आसुरी से भी निकृष्ट कानूनों द्वारा कुचला जा रहा है, जाति व सम्प्रदाय के नाम पर शासकीय व सामाजिक भेदभाव (आरक्षण व छूआछूत) के द्वारा समाज को नष्ट किया जा रहा है। महिला-पुरुष, माता-पिता व सन्तान, निर्धन-धनी, शहरी व ग्रामीण, सबके बीच खाई खोद कर सामाजिक ढांचे को छिन्न-भिन्न किया जा रहा है। इधर कोर्ट लगातार ब्रह्मचर्य व सदाचार की गौरवशाली परम्पराओं को एक-एक करके जीवित जला रहा है।

हे राम! आप तो मर्यादा पुरुषोत्तम एवं वेद वेदांग विज्ञान के महान् ज्ञाता भगवत्स्वरूप थे, परमपिता परमात्मा की पावन गोद में सदैव रमण करने वाले सम्पूर्ण प्राणी-जगत् के परिपालक व रक्षक थे। आपने उस समय के दुष्ट रावण, जो वर्तमान नेताओं, न्यायाधीशों व अन्य कथित प्रबुद्धजनों व कथित राष्ट्रभक्तों से सैकड़ों गुना श्रेष्ठ था तथा उसकी बहिन शूर्पणखा को उनकी स्वच्छन्द कामुक प्रवृत्ति के लिए दण्ड़ दिया था, परन्तु आज हे राम! आपके इस अभागे राष्ट्र में त्रेतायुग के राक्षसों से कई गुने भयँकर व कामी राक्षसों का निर्लज्ज ताण्ड़व हो रहा है।

आज द्वापर के दु:शासन दुर्योधन, शकुनि व कर्ण की चौकड़ी द्वारा पतिव्रता रजस्वला धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपत्नी (केवल धर्मराज की, न कि पांचों पाण्डवों की) महारानी द्रौपदी का चीरहरण हुआ था परन्तु आज तो सब ओर यह चौकड़ी कुण्डली मारे दिखाई दे रही है। उस समय तो एक व्यक्ति तो था, जो उन्हें तथा उस समय मूकदर्शक बने महापुरुषों को धिक्कार रहा था। आज वो महात्मा विदुर भी नहीं दिखाई दे रहा। कोई चौकड़ी के सदस्य हैं, तो कोई घृतराष्ट्र, तो कुछ एक भीष्म, द्रोण व कृपाचार्य के समान विवश हैं।

उस समय तो वैदिक धर्म के महान् संरक्षक योगेश्वर भगवत्पाद श्रीकृष्ण ने दुष्ट जनों को दण्ड़ दिया था परन्तु आज वे कृष्ण भी तो कहीं नहीं हैं। आज तो उन योगेश्वर को भी उनके ही नादान भक्तों के द्वारा कन्याओं के साथ नचाया व रास रचाया जा रहा है, उन्हें भी राधा का प्रेमी व गोपियों के साथ यौनाचार करने वाला बताया जा रहा है।

हे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम! तपस्वी महामना शम्बूक बध व गर्भवती देवी सीता जी को घर से निकालने के मिथ्या दोष तो आप पर भी आपके ही नादान भक्तों ने मढ़ दिये परन्तु भगवान् श्री कृष्ण आदि पूज्य भगवन्तों का चरित्र हनन तो घृणास्पद स्तर तक इनके ही नादान भक्तों ने पहुँचा दिया है। कोई कभी-कभी उस मिथ्या दोषों को वास्तविक इतिहास मानकर पापपूर्ण निर्णय दे रहे हैं और भविष्य में क्या होगा कौन जाने ?

हे वैदिक धर्म के महान प्रतिपालक भगवन् श्री राम ! कोई व संसद के फैसलों से मेरे जैसा वेदानुरागी राष्ट्रभक्त एवं सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार समझने वाला बहुत आहत है। कल के फैसले से मेरा शरीर शिथिल हो रहा है, मस्तिष्क चकरा रहा है। मैं जिन कथित प्रबुद्धों को अपने वेदविज्ञान के द्वारा बौद्धिक दासता की बेड़ियों से मुक्त करना चाहता हूँ वे ही मेरे मूर्ख भाई आज कहाँ जा रहे हैं, उन्हें ये नये-नये कानून कुमार्ग पर ले जा रहे हैं। हे राम! नये-नये कानून व न्यायालयों के निर्णय आपके आदर्शों की हत्या कर रहे हैं। देश के रखवाले मूकदर्शक है।

हे राम! इस देश की संस्कृति परायी स्त्री को माता समझती थी परन्तु आज यह क्या हो रहा है ? जिस पतिव्रत धर्म के कारण भगवती देवी सीता, सती सावित्री, सती अनसूया, देवी रुक्मिणी जैसी महान् नारियां विश्व पूज्य रहीं। जिसके लिए रानी पद्मिनी व रानी कर्मवती जैसी अनेकों क्षत्राणियों ने अपने को अग्नि में आहुत कर दिया, आज हमारे न्याय के मन्दिर उस पतिव्रत व पत्नीव्रत धर्म की चिता जला रहे हैं अर्थात् ये कानूनवेत्ता वा कानून के रखवाले इन देवियों की हत्या कर रहे हैं।

भगवान् मनु, महादेव शिव, भगवान् विष्णु, महर्षि ब्रह्मा, महर्षि भारद्वाज, महर्षि वसिष्ठ, महर्षि अत्रि, महर्षि अगस्त्य, महर्षि व्यास आदि हजारों के निर्मल चरित्र वाले वेदज्ञ वैज्ञानिकों का भारत, इक्ष्वाकु, मान्धाता, हरिश्चन्द्र, रघु, राम, दुष्यन्त पुत्र भरत जैसे अनेक महान् धर्मात्मा राजपुरुषों का भारत, महर्षि परशुराम, महावीर हनुमान, भीष्म पितामह, आद्य शंकराचार्य एवं महर्षि दयानन्द जैसे अखण्ड़ ब्रह्मचारियों का भारत, महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी जैसे वीतराग पुरुषों व अपाला, गार्गी, घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी जैसी विदुषियों का देश आज अपने ही काले अंग्रेज बने पुत्रों से पग-पग पर हार रहा है। वास्तविकता तो यह है कि हमारा प्यारा भारत मर गया है और उसके शव पर खड़े होकर क्रूर, कामी, पापी इंडिया निर्लज्ज नग्न नृत्य कर रहा है।

हे भगवान् राम! आज आपके कथित भक्त, हिन्दू-हिन्दू का जाप करने वाले संगठन, राजनैतिक दल सब मौन हैं। कोई कहीं आन्दोलन नहीं हो रहा। इस फैसले को बदलने के लिए कोई सोच भी नहीं रहा है। बात-बात में आन्दोलन व अराजकता फैलाने वाले आज क्यों शान्तिपूर्वक आन्दोलन नहीं करते? हाँ, अराजकता फैलाना तो राष्ट्र के प्रति द्रोह जैसा होता है परन्तु शान्तिपूर्वक आन्दोलन करना देश के प्रत्येक जागरूक नागरिक का धर्म है। आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वयं को भारतीय, आर्य वा हिन्दू कहने पर गर्व करने वाला (महिला वा पुरुष) राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व सभी दलों के नेताओं को लगातार पत्र लिखकर दबाव बनाये, जिससे यह पिशाचों जैसा निर्णय वापिस लिया जा सके। कोर्ट से तो केवल पुनर्विचार की अपील ही की जा सकती है, जो सभी सक्षम नागरिकों को करनी ही चाहिए।

मैं तो आप सबको जगा ही सकता हूँ, मैं ऐसे कामी निर्णय करने वालों से कोई याचना नहीं कर सकता।

हे राम! अब कोर्ट में आपके मंदिर बनने पर सुनवाई होनी है। इस देश की कथित रामभक्त जनता की आपके मंदिर बनाने की इच्छा है परन्तु आपके निर्मल चरित्र के विनाश पर उनके हृदय में कोई हल-चल नहीं है। यह जनता चित्रों व मूर्तियों की पूजा को ही धर्म समझ रही है और ब्रह्मचर्य, सदाचार, प्रेम, करुणा जैसे वैदिक वा मानवीय मूल्यों से इनको कोई प्रेम नहीं रह गया है। आज कामुकता, हिंसा, वैर, दर्द, प्रतिशोध, अहंकार, द्वेष की अनिष्ट तरंगों से सम्पूर्ण आकाश व मनस्तत्त्व दूषित हो चुका है। इसी के कारण सम्पूर्ण विश्व में भयंकर चक्रवात, तूफान, भीषण गर्मी, दावानल, भूकम्प, सुनामी, बाढ़ व सूखा जैसी आपदाओं के साथ-साथ नाना प्रकार के अपराधों में सतत वृद्धि हो रही है और इन पापों के कारण अभी और अधिक त्रासदी आयेगी।

हे मेरे प्यारे देशवासियो! यदि आपका हृदय पत्थर का न हो और आपके अन्दर श्री राम के प्रति कुछ भी भक्ति शेष बची हो, तो मेरे इस लेख पर कुछ तो विचार करो। कोर्ट के निर्णय पर कुछ तो आंसू बहाओ, अपनी कुम्भकर्णी नींद से कुछ तो जगो, अन्यथा ईश्वर आपको कभी क्षमा नहीं करेगा। हमारे महान् पूर्वजों की स्मृतियां आपको धिक्कारेंगी। उठो! ऋषि-मुनियों के महान् वंशजो! अपने आत्मगौरव को जगाओ, माँ भारती व वेदमाता के दर्द को पहचानो, अपने धर्म व कर्त्तव्य को समझो। इसे, यदि कोई कथित प्रबुद्ध (वास्तव में बौद्धिक दास) धर्म, ईश्वर, वेद, ऋषियों व देवों का उपहास करने का दुस्साहस करे और आप उसका तर्कसंगत उत्तर न दे सकें, तो आप ऐसे अहंकारी कथित प्रबुद्ध (वास्तव में बौद्धिक दास) को मेरे पास लेकर आ सकते हैं और वह मेरे से ज्ञान युद्ध कर सकता है।

हे श्री राम! आप तो इस समय मोक्षधाम में परमपिता परमात्मा की अमृतमयी गोद में विचरण कर रहे हैं, इधर आपके नादान भक्त आपको परमात्मा का अवतार मानकर यही सोचते हैं कि अधर्म बढ़ने पर आप अवतार लेंगे। भला, इससे अधिक और क्या अधर्म बढ़ेगा ? ये महानुभाव अन्धश्रद्धा से अकर्मण्य होकर सैकड़ों वर्षों से हाथ पर हाथ धरे बैठे सारे पापों को सह रहे हैं। हाँ, यदि कोई इस अन्धश्रद्धा से जगाता है, तो उसको ही अपना शत्रु समझ बैठते हैं। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन कथित रामभक्तों में सच्ची ईश्वर पूजा का भाव जगा कर आप श्री राम का सच्चा अनुयायी बनने के साथ-साथ देश के न्यायाधीशों, वकीलों तथा सभी प्रबुद्ध जनों को न्यायशील बनने की सद्बुद्धि व शक्ति प्रदान करें।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।